226 P
825
H
Microfilm

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY.
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.
Call No.
Book No.

V/20/1

1942/10/21

891143 SW 25 5

13 825 6 13

स्वराज की देवी

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931

* जिसको *

गोरधनदास धर्मदास, पब्लिशर्स

बाज़ार नखासा, सहारनपुर।

ने

॥ शान्ति प्रिंटिंग प्रेस में छपवाई ॥

प्रथमवार १००० | सन् १९२१ | मूल्य)॥

दुन्या में क्या किसी के दिन एकसे हुए हैं।

हम भी कभी जियेंगे जो अब मरे हुए हैं ।
हम भी कभी चढ़ेंगे जो अब गिरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ १ ॥

भारत स्वतंत्र होगा जकड़ा हुआ है जो अब ।
दुन्या में क्या किसी के दिन एक से हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ २ ॥

झेली नहीं मुसीबत हम ने यार क्या क्या ।
दिल थाम कर के बैठे दिन ही फिरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ३ ॥

डायर की तेग़ देखी जिल्यान वाला देखा ।
भूलेंगे उस को कैसे दिलमें धरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ४ ॥

लाखों के बाप बिछूड़े हज़ारों सुहाग उजड़े ।
हम कर ही क्या हैं सकते ध्यान प्रभु का धरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ५ ॥

मेहमान बन के आये वे ही हैं ज़ुल्म करते ।
हम आंख को हैं मूंदे धीरज किये हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ६ ॥

इतनी हैं मार खाते रो भी नहीं हैं सकते ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY * GOVT. OF INDIA *
No. 321
Date 22-12-...

॥ देखो ये कैसी नीति बृटिश धरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ७ ॥
मुंह से यादि कहें कुछ तो जेलखाने जावें।
लिख के यादि बताते तो एक्ट से डरे हुए हैं ॥
हम भी कभी ॥ ८ ॥
वे जुलम हम पे कर लें, हम तो झुकायें सर हैं।
तब भी न मुंह से बोलें यादि सूली चढ़े हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥ ९ ॥
हम भी स्वतंत्र होंगे, ऐसा समय भी होगा।
कि जालिमों के सर पे दामन धरे हुए हैं ॥
हम भी कभी० ॥१०॥

एक तेरे हितके कारण जेलखाने भरेहुये हैं

प्राणों के आधार पियारे हिन्दुस्तान हमारे।
मत तू बन दुखारे कि दिन ही फिरे हुए हैं ॥
एक तेरे हित के० ॥ १ ॥
तू भी स्वतंत्र, होगा स्वराज यां पे होगा।
थोड़े दुख और उठाले फिर सुख ही धरे हुए हैं ॥
एक तेरे हित के० ॥ २ ॥
तिलक था तेरा नेता अरु लाजपत सहायक।

एक तेरे हित के कारण जेलख़ाने भरे हुए हैं ॥
'गोखले' था बन्धु तेरा और है अली सहायक ।
तू तो स्वतंत्र होगा आशा धरे हुए हैं ॥
एक तेरे हित के० ॥ ३ ॥
उजड़ा हुआ तू भारत फिर से नया बसेगा ।
पावेंगे हम विजय को यदि अब हरे हुए है ॥
एक तेरे हित के० ॥ ४ ॥
बहुत रोलिया है भारत अब तू भी हंसेगा ।
रूहें हंसेंगी उनकी जो तुझपे मरे हुए हैं ॥
एक तेरे हित के० ॥ ५
गुलामी की जड़ कटेगी और तू स्वतंत्र होगा ।
हिम्मत कभी न हारें ध्यान प्रभु का धरे हुए हैं ॥
एक तेरे हित के० ॥ ६ ॥
'प्रेमी' है दास तेरा 'गांधी' है लाल तेरा ।
तू क्यों बना है आरत तुझ पे लाखों मरे हुए हैं ।
एक तेरे हित के० ॥ ७ ॥

देवी स्वतंत्रते ।

हे देवी स्वतंत्रते भारत में तुम कब आओगी ।
कब दीन दुखिया भारतियों पर कृपा दिखलाओगी ॥

हे देवी करि करुणा बिलकहु भीर जो हम पे पड़ी ।
सब भांति आरत देश भारत बन रहा है इस घड़ी ॥
जो भूमि स्वर्ग समान थी वह आज तुल्य मशान है ।
जो सब सुखों का केन्द्र था वह आज दुखों की खान है ॥
हम जो कभी फूले फले थे स्वराज राज बसंत में ।
डायर की शाही देखनी हमको पड़ी है अंत में ॥
जकड़े हुए प्रतंत्रता की बेड़ियों से आज भारत लाल है ।
वे विवश हैं दीन हैं और बन्द उनकी चाल है ॥
उपासक जो थे तुम्हारे तुमने भी चाहा जिन्हें ।
देवी हे करके कृपा अब मुक्त तुम करदो उन्हें ॥
हे देवी यदि तुम को शिवा परताप की कुछ लाज हो ।
तो तुम यही करदो कृपा भारत पे तुम्हारा राज हो ॥
स्वतंत्र भारत भूमि हो दूःखों का उसके अंत हो ।
प्रतंत्रता का नाश हो और स्वराज राज बसंत हो ॥

बसकरोसुनलिया क्याउनकाभी करतारनहीं

आप से सहयोग करने को बृटिश हम तय्यार नहीं ।
आप की नज़र है सर लो ज़रा इनकार नहीं ॥
आप से सहयोग करने० ॥ १ ॥
शर्म होती जो किसी पाप के बदले मरता ।

मुल्क के वास्ते जां देने मे कुछ आर नहीं ॥
आप से सहयोग करने० ॥ २ ॥
मत अज़ाबों से डराओ मुझे डरना क्या है ।
दूध मादरे हिन्द का पीना यहां बेकार नहीं ॥
आप से सहयोग करने० ॥ ३ ॥
समझ क्या बैठे हैं बुज़दिल मुझे मेरे दुशमन ।
मुझ में वह सत्ता है जिसे वार नहीं पार नहीं ॥
आपसे सहयोग करने० ॥ ४ ॥
मां का दुख बीवी का रंडापा जो सुनाते मुझको ।
बस करो सुन लिया क्या उनका भी कर्तार नहीं ॥
आपसे सहयोग करने० ॥ ५ ॥
तुम जिसे मांगते हो दुन्यां के सुख के बदले ।
मुझ को वह त्याग कर जीना भी दरकार नहीं ॥
आप से सहयोग करने० ॥ ६ ॥
आज़ादी ईश्वर की अमानत है वह बेचूं क्योंकर ।
उस के बदले में मैं दोलत का ख़रीदार नहीं ॥
आपसे सहयोग करने० ॥ ७ ॥
आत्मा मरती नहीं जिस्म को चाहे मारो ।
काटती असल आजादी को यह तलवार नहीं ॥
आप से सहयोग करने० ॥ ८ ॥

मुल्क और क़ौम की आज्ञा को मैं टालूं क्योंकर ।
फूल पाऊंगा कहां जहां के हैं ख़ार नहीं ॥
आप से असहयोग करने ॥ ९ ॥

वरना एकबात में पोल खुला रक्खा है ।

हमने ब्राटिश से असहयोग जो कर रखा है ।
हमारे क़तल को जो ख़ञ्जर उठा रक्खा है ॥
हमने ब्राटिश से असहयोग० ॥ १ ॥
ब्राटिश ने आज़ादी को जो हम से छिपा रखा है ।
जलवे हक को तहे संग दबा रखा है ॥
हमने ब्राटिश० ॥ २ ॥
कहदो युरुप वालों से झगड़ा न करें भारत से ।
वरना एक बात में पोल खुला रखा है ॥
हमने ब्राटिश से० ॥ २ ॥
सदके इस फ़हम के इस अक़लो खुरु के क़ुर्बान ।
मालिकों को ना काबिल बता रखा है ॥
हमने ब्राटिश से० ॥ ३ ॥
क़ैद सिलासिल से तुम किस को डराते हो जी ।
गांधी ने यह रास्ता अच्छा बना रखा है ॥
॥ समाप्तम् ॥

पढ़ने योग्य पुस्तकें अवश्य पढ़िये ।

जेल गीत	।-)	इतिहासिक भजन	।=)
चन्द्र गीताञ्जली	।)	चन्द्रोदय	।)
महात्मा गांधी की कलदार तोप	)॥	आज़ाद बुलबुल	-)
अंग्रेज़ों की कुकड़ूकूं	)॥	सदाये वतन उर्दू	≡)

॥ छप रही हैं ॥

ऐलान जङ्ग	)॥	भारत वाटिका	।)
राष्ट्रिय पुष्प वर्षा	।)		

☞ कविता बनाने वाले साहब हम से बात चीत करें ।

गोरधनदास धर्मदास

बाज़ार नखासा, सहारनपुर ।

नोट—एक दो पुस्तक मंगाने वाले साहब डाक ख़र्च और पुस्तक का मूल्य पहिले भेजें नहीं तो ख़र्चा ज़ियादा लगेगा ।